



पो. बा. नं. २१३, डॉ. डी. एन. रोड, बंबई.  
टेलीफोन : ४१५०२७१ • तार : इंडियाना

१९ दिसंबर, ४४

आदरणीय रजा जी,

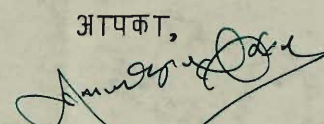
आपका पत्र और जानिन की प्रदर्शनी की पत्रिका मिली। पत्रिका बहुत ही खूबसूरत छपी है। यद्यपि इसमें लिखा हुआ विवरण फ्रांसीसी भाषा में है। काश, फ्रांसीसी मैं समझ पाता।

आप दोनों की यहां बड़ी बेकरारी से प्रतीक्षा हो रही है। बंबई में जिस मित्र से भी मुलाकात होती है, वह आपके कार्यक्रम के बाबत पूछता है। बाल छाबड़ा, तैयब, केकू और भी बहुत से लोग हर सप्ताह मिल जाते हैं। इसी बीच ग्रीमो भी बंबई आये थे। उनसे भी आपकी चर्चा हुई। आशा करूंगा कि इस बार आप थोड़ा समय हम लोगों के लिए अलग से निकालेंगे। उम्मीद है नार्वे की आपकी प्रदर्शनी सफल रही होगी। मैं गोरवियो तो आना जरूर चाहता था किंतु इस बार टिकट सीधा अमर्स्टर्डम का ही था और इतनी लंबी यात्रा कुछ मजबूरियों के कारण नहीं की जा सकती थी। अफसोस रहा और रहेगा।

शेष शुभ है। आपके पत्र का इंतजार कर रहा हूं, जिसमें आप अपना पूरा कार्यक्रम लिखेंगे। जानिन जी को याद दिलाइएगा। उन्हें घर पर भी आना है।

नये वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

श्री एस. एच. रजा,  
पेरिस,

आपका,  
  
॥ मनमोहन सरल ॥

पुनश्च : आपका दूसरा पत्र भी मिल गया। सिओल वाली पारदर्शी रख ली है।

सुजाता का पत्र भी मिला है। वह बहुत प्रसन्न और उत्तेजित है। बस, अब प्रतीक्षा ही है।

